Dr. Rachana Kumari
Deptt. of Psychology
H. D. Jain College Ara.

तर्कणा
(Reasoning)

चिंतन तथा समस्या समाधान में तर्क का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। प्रायः समस्या का समाधान में हम तर्क का सहारा लेते हैं। तर्क करना (Reasoning) एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसके सहारे सूचनाओं को एकत्रित कर उनके विश्लेषण के सहारे किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

इंगलिंग और इंगलिश के अनुसार तर्कणा चिन्तन का वह रूप है जिसकी पूरी अभिव्यक्ति तर्कणा समस्त रूप में होती है। तर्कणा करने वाले प्राणी को इस बात का बोध होता है कि एक निश्चय दूसरे निश्चयों पर आधारित होता है।

एन० एल० मन के अनुसार समस्या के समाधान हेतु तर्कगत अनुभवों का समायोजन किया जाता है। यह समायोजन तभी सम्भव है जब गत समाधानों के पुनरूत्पादन से समस्या का समाधान नहीं होता है।

जेम्स ड्रेवर के अनुसार तर्क चिन्तन की वह प्रक्रिया है जिसमे निष्कर्ष होता है और सामान्य नियमों के आधार पर समस्या का निवारण होता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि समस्या एक प्रकार की परिस्थिति है जिसका मनुष्य के पास समाधान नहीं होता है। अतः समस्या के हल के लिये चिन्तन और तर्क की आवश्यकता होती है। चिंतन की सबसे उँची अवस्था को तर्क कहते हैं।

तर्कणा के कार्य (Functions of Reasoning)

(1) तर्क द्वारा मनुष्य उस सामग्री को खोजने या एकत्र करने का प्रयत्न करता है जो समस्या के निवारण में सहायक हो सकती है।
(2) समस्या समाधान के सभी सम्भव उपायों का अनुमान मनुष्य तर्क के द्वारा ही लगाता है।
(3) मनुष्य तर्क द्वारा ही भिन्न-भिन्न अनुमानों की तुलना करता है।
(4) तर्क द्वारा समस्या के निवारण के सम्बन्ध में अनुमानों को खोजने के साथ ही उनकी सत्यता को जाँचने के लिये भी तर्क का उपयोग करता है।

तर्कणा के प्रकार (Types of Reasoning)

(1) निगमनात्मक तर्क (Deductive Reasoning) –

यह तर्क इस प्रकार का होता है कि जिसमें मनुष्य अपनी समस्या के सम्बन्ध में सामान्य सिद्धान्त के आधार पर विशिष्ट निष्कर्ष निकालता है। सामान्य सिद्धान्त के अनुसार वह जानता है कि काँच की सभी वस्तुयें गिरकर टूट जाती है अतः यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि गिलास भी काँच का बना है इसलिये यह भी गिरने पर टूट जायेगा।

(2) आगनात्मक तर्क (Inductive Reasoning)

यह वह तर्क है जिसमें मनुष्य किसी विशेष घटना के आधार पर किसी सामान्य सिद्धान्त को प्रतिपादित करता है। इस तर्क का स्पष्टीकरण निगनात्मक तर्क के एक उदाहरण से किया जा सकता

है। एक मनुष्य से एक बार गिलास गिरकर टूट गया। दूसरी बार काँच की कुछ चूड़ियाँ गिरकर टूट गयी या फिर दर्पण गिर कर टूट गया। इन सभी घटनाओं के आधार पर मनुष्य इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि काँच की वस्तुयें गिरने पर टूट जाती हैं। आगनात्मक तर्क किसी पूर्वधारणा पर नहीं बल्कि वर्तमान स्थिति के विश्लेषण पर निर्भर करता है। अतः यह अधिक वैधानिक और सही होता है। यह विशिष्ट प्रेक्षण या तथ्य के आधार पर सामान्य निष्कर्ष निकाला जाता है। इस तरह यह प्रक्रिया निगनात्मक तर्क की प्रक्रिया के विपरीत होती है।